अध्याय - पचंम

शोध सारांश एवं निष्कर्ष

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय– पचंम
शोध सारांश एवं निष्कर्ष

5.1 प्रस्तावना :– शोध कार्य के आरम्भ में शैक्षिक आकांक्षा कि पृष्ठभूमि तथा इससे सम्बंधित शोधकार्यो का विवरण देखने के पश्चात् निश्चित् शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया के अनुसार आकडों के विश्लेषण पूर्वक परिणाम प्राप्त हुए। उक्त अध्याय में शोध सार प्रस्तुति के पश्चात् शोधकार्य के निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ प्रतिपादित करते हुए 'शोध विषयों से सम्बंधित भविष्य में किए जा सकने वाले 'शोधकार्य हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए है।

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करना है, अर्थात् शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, व्यावसायिक आदि। प्रत्येक व्यक्ति अपने भविष्य के प्रति कुछ आकांक्षाएँ, अपेक्षाएँ होती है, उसी के आधार पर वह अपना जीवन निर्माण करता है, अतः आकांक्षाओं का व्यक्ति के जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान है। तथा व्यक्ति की आकांक्षा विभिन्न कारकों से प्रभावित भी होती है।

शोध परिचय के अन्तर्गत उन सभी महत्वपूर्ण पहलुओं का उल्लेख किया जो विद्यार्थी जीवन तथा उसकी शिक्षा से सम्बंधित है, इसी अध्याय मे शोध के उद्देश्य एवं शोध की परिसीमाएँ भी उल्लेखित की गई है। उद्देश्यों की पूर्ति हेतु परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया। द्वितीय अध्याय में सम्पूर्ण शोध कार्य सम्बंधित साहित्य का विवरण दिया गया। अध्याय तृतीय में जिसमें शोध कार्य से सम्बंधित विधि, चर, उपकरण न्यादर्श चयन, उपकरण का प्रशासन, तथा प्रयुक्त सांख्यिकी विधियों का उल्लेख किया गया। चतुर्थ अध्याय में प्राप्त प्रदत्तों की व्याख्या तथा विश्लेषण किया गया।

5.2 शोध –सार

वर्तमान बढ़ती हुई शैक्षिक आकांक्षा को देखते हुए इसे प्रभावित करने वाले कारणों का अध्ययन करने के लिए उक्त शोधकार्य महत्वपूर्ण तथा प्रासंगिक प्रतीत होता है, अतः इस **आवश्यकता** को देखते हुए निम्नलिखित **उद्देश्यों** कार्य हेतु निर्धारित किया गया।

1. कक्षा ग्यारहवीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।

2. लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।

3. विद्यालय प्रबंधन के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।

4. विभिन्न संकाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।

5. शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।

6. अभिभावकों के व्यवसाय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।

7. अभिभावकों की मासिक आय के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।

इन उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिए शोधार्थी द्वारा निर्मित व्यक्तिगत जानकारी प्रपत्र तथा शैक्षिक आकांक्षा मापने का प्रयोग करते हुए निर्मित परिकल्पनाओं के परिक्षनार्थ एकत्रित आकड़ों के साख्यिकी विश्लेषण के उपरान्त यह परिमाण प्राप्त हुए।

5.3 निष्कर्षः–

5.3.1 कक्षा ग्यारहवीं के 80 प्रतिशत विद्यार्थियों की आकांक्षा का स्तर अवसत पाया गया। निष्कर्ष यह निकलता है, कि प्रायः विद्यार्थियों कि शैक्षिक आकांक्षा का स्तर औसत होता है, अर्थात न अधिक उच्च और न ही अधिक निम्न।

5.3.2 विद्यालय प्रबन्धन के आधार पर शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों (मध्यमान 37.24) एवं निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का मध्यमान 39.312 है, इससे यह निष्कर्ष निकलता है, कि विद्यालय प्रबन्धन का विद्यार्थियों कि आकांक्षा पर कोई प्रभाव नही पड़ता।

5.3.3 लिंग के आधार पर छात्र (मध्यमान 39.92) तथा छात्राओं (मध्यमान 37.48) कि शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। इससे यह निष्कर्ष निकलता है, कि छात्र एवं छात्राओं कि शैक्षिक आकांक्षा का स्तर प्रायः समान होता है।

5.3.4 शैक्षणिक श्रेणी के आधार पर प्रथम श्रेणी (मध्यमान 39.5) तथा द्वितीय श्रेणी (मध्यमान 36.58) के विद्यार्थियों कि शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है, कि शैक्षणिक श्रेणी का विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा से कोई सम्बन्ध नही होता।

5.3.5 संकाय के आधार पर विज्ञान (मध्यमान 38.52) तथा वाणिज्य (मध्यमान 37.5) संकाय के विद्यार्थियों कि शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया। अर्थात संकाय का उनकी शैक्षिक आकांक्षा से कोई सम्बन्ध नही है।

5.3.6 अभिभावकों के व्यवसाय को तीन श्रेणियों मे वर्गीकृत किया गया जिसमें 1. शासकीय / निजी कर्मचारी (मध्यमान 38.659), व्यापार (मध्यमान 37.34) मजदूरी (मध्यमान 37.86) तीनों श्रेणियों के आधार पर विद्यार्थियों कि शैक्षिक आकांक्ष ामें कोई सार्थक अंतर नही पाया गया। अर्थात् अभिभावकों के व्यवसाय से छात्रों कि शैक्षिक आकांक्षा का कोई सम्बन्ध नहीं होता।

5.3.7 अभिभावकों कि मासिक आय को तीन स्तरों मे वर्गीकृत किया गया। 5000/– रुपये से कम (मध्यमान 38.30), 5000/– रुपये से 10000/– रुपये (मध्यमान 36.37) तथा 10000/– रुपये से अधिक (मध्यमान 40.26) तीनों स्तरों के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया। अर्थात् अभिभावकों कि मासिक आय का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा पर नही पड़ता।

अंतिम निष्कर्ष :–

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है, कि विद्यार्थियों कि शैक्षिक आकांक्षा पर किसी भी प्रकार के कारकों का प्रभाव नहीं पड़ता उनके आकांक्षा स्वतंत्र होती है। अर्थात शिक्षा में जितने अवसर बढ़ते जाते है,

शैक्षिक आकांक्षायें भी बढ़ती जाती है। तथा सामाजिक तत्वों का प्रभाव कम होता जा रहा है। राबर्ट (1998) के अध्ययन कि इस शोध ने पुष्टि कर दी है, कि अभिभावकों के व्यवसाय से छात्रों कि शैक्षिक आकांक्षा कोई सम्बन्ध नहीं होता ।

5.4 शैक्षिक निहितार्थ :-

प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है, कि वर्तमान में भविष्य निर्माण हेतु विद्यार्थियों को नित्य नवीन अवसर प्राप्त हो रहे है, अतः शैक्षिक आकांक्षा का स्तर भी बढ़ रहा है, प्राप्त निष्कर्षो से शैक्षिक दृष्टि से यह शोध नितान्त उपयोगी हो सकता है, क्योकि

1. प्रत्येक **शिक्षक** को छात्रों कि आकांक्षा स्तर का ज्ञान होना चाहिए ताकि उसके अनुरूप वह उन्हे मार्गदर्शन व परामर्श दे सके।
2. शैक्षिक आकांक्षा उक्त शोध के अनुसार स्वतंत्र होती है, अतः **विद्यालय प्रबन्धन** को चाहिए की वह विविध अवसरों को उपलब्ध कराए तथा उनकी प्राप्ती सुनिश्चित करे।
3. प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है, कि अभिभावकों कि आय व्यवसाय इत्यादि से छात्रों कि शैक्षिक आकांक्षा अप्रभावित रहती है, अतः **अभिभावकों** को स्वयं कि स्थिति से निराश न होकर स्वयं कि बालक- बालिकाओं कि आकांक्षा का सम्मान करते हुए उनकी पूर्ति हेतु मार्ग का अन्वेषन करे।
4. प्रस्तुत शोध कार्य स्पष्ट करता है, कि बालिकाओं मे भी समान शैक्षिक आकांक्षा पाई जाती है, अतः समाज व अभिभावक समस्त पूर्वाग्रहों को त्याग कर बालिकाओं को भी समान अवसर उपलब्ध कराये।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों कि शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शैक्षिक आकांक्षा और मनोवैज्ञानिक तत्वों के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना।

3. शैक्षिक आकांक्षा ओर समाजिक तत्वों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

4. शैक्षिक आकांक्षा पर सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करना।

5. कक्षा 9वीं एवं 10वीं के विद्यार्थियों कि शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. धर्म आधारित शालाओं के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना।